Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 08, Issue-II, August 2023

तबला संगति के परिप्रेक्ष्य में रस निष्पतिः एक सामीक्षात्मक अध्ययन
(Rasa Nishpati in reference to Tabla Accompaniment: An Analytical Study)

Meena Kumari[a,*]
[a] *Research Scholar, Department of Performing Arts, Himanchal Pradesh University, Shimla, (India)*

KEYWORDS
निष्पति, अर्विभाव, पटाक्षर, एकाक्षरी, द्वयाक्षरी, रसवर्दधक, चतुस्त्र, विभत्स

ABSTRACT
प्रस्तुत आलेख में तबला संगति के परिप्रेक्ष्य में रस निष्पति में लय, ताल, स्वर, वाद्य तथा वाद्यों संगति के लिए प्रयुक्त तालों तथा लयों के द्वारा जो रस निष्पति होती है उस पर विचार किया गया है। तबलों के बोलों द्वारा रस निष्पति, तालों द्वारा रस निष्पति, तालों की विभिन्न जातियों से रस निष्पति, लय द्वारा रस निष्पति आदि का वर्णन किया गया है। गायन वादन के साथ यदि संगति के उपरोक्त सिद्धांतों का तालमैल ठीक बैठ जाए तो निश्चित ही रसो की अनुभूति प्राप्त होती है। तबले के विभिन्न बोल रस उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं जिस कारण किसी भी प्रस्तुति को सुनते हुए श्रोताओं को अधिक आनंद प्राप्त होता है अतः इस शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा तबले के बोलों से विभिन्न प्रकार के रसों की उत्पत्ति होने का वर्णन किया गया है।

विषय वस्तु

संगीतिक गीत विधाओं के प्रस्तुतिकरण में कलाकार का मुख्य लक्ष्य राग में निहित रसों द्वारा आनन्द प्राप्त करना है। प्रस्तुत आलेख में तबला–संगति में निहित विभिन्न रसों जैसे तबले के बोलो द्वारा रस निष्पति, तालों द्वारा रस निष्पति, तालों की विभिन्न जातियों द्वारा रस निष्पति, लय द्वारा रस निष्पति आदि का वर्णन किया गया है।

रस सिद्धान्त के प्रणेता आचार्य भरत माने जाते है। भरत में सर्वप्रथम शास्त्रीय रूप में रस की व्याख्या करके उसके विभिन्न अवयवों का विवेचन अपने नाट्य शास्त्र में किया है। साहित्य में नव रस माने गए है तथा नाट्य में आठ रसों का अविर्भाव होता है एवं विभावों, अनुभवों और व्यक्तिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पति होती है। रस निष्पति में लय, ताल, स्वर, वाद्य तथा संगति वाद्यों का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

संगीत में रस निष्पति के लिए स्वरों के साथ–साथ ताल वाद्यों की भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारे हृदयस्थ भावों के अनुकूल ध्वन्योत्पादक वाद्यों पर तदानुकूल वर्णों तथा पटाक्षरों के विन्यास से विशिष्ट भावों को अद्दीप्त करने में सहायता मिलती है। रस निष्पति के लिए अवनद्य वाद्यों का विशेष स्थान है। मृदंग, नगाड़ा, ड्रम आदि वाद्य वीर तथा रौद्र रस के अविर्भाव में सहायक होते है, तो ढोलक, तबला, डफ, खंजरी आदि श्रृंगार रस को पोषित करते है। तबले का मुख्यतः श्रृंगार से रहा है और संगीत की सभी विधाओं में तबला संगति सुकुमार भावों की अभिव्यक्ति कराती है यहां यह जानना अप्रासंगिक नहीं है कि तबला संगति में तबले के बोल, तबले की ताले, तालो की विभिन्न जातियों तथा लय द्वारा रसोत्पादन होता है। तबले में प्रयुक्त होने वाले वर्ण किसी निर्दिष्ट रस की सृष्टि करने में असमर्थ है। जैसे तीनताल

Corresponding author
***E-mail:** meenakumari04121989@gmail.com (Meena Kumari). https://orcid.org/0009-0005-0822-6228
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v8n2.03
Received 10th June 2023; Accepted 15th July 2023
Available online 30th August 2023
2456-0146 /© 2023 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

में निबद्ध किसी भक्ति रस की रचना के साथ तबले में जिन वर्णों का प्रयोग होता है वीर, या श्रृंगार रस की रचना के साथ भी भी वही वर्ण प्रयुक्त होते है। अतः यह स्पष्ट है की ताल का निजी कोई रस नहीं होता। श्री एस. आर. बागची के शब्दों में क्योंकि प्रत्येक स्वर की आन्दोलन संख्या निर्धारित है, इसलिए स्वरों द्वारा रस निष्पति सम्भव है परन्तु तबले में प्रयुक्त होने वाले बोलों की आन्दोलन संख्या नहीं है, ना ही ये बोल किसी सिद्धान्त पर आधारित है, इसलिए तबले के बोल अनियमित है और रसहीन है। परन्तु अपने एक अन्य विचार में उन्होंने स्पष्ट किया है, कि तबले में बोलों से रस निष्पति तभी सम्भव हो सकती है। जब स्वरों की ही भाँति तबले के बोलों की भी आन्दोलन संख्या निर्धारित की जाए। तबले के बोलों के संयोग से ही तालों का निर्माण होता है इसलिए जिस प्रकार के बोल होंगे उसी प्रकार के उसके विभाग होगे, छंद की संरचना होगी, ताली खाली आदि निर्धारित होगी। इस प्रकार समान विभाग, समान तालों, खाली होते हुए भी तालों की प्रकृति और तालों का रस अलग–अलग दुष्टिगोचर होता है। जहाँ बारह मात्रा की एकताल श्रृंगार रस के लिए उपयुक्त है, वहां बारह मात्रा की ही चौताल गम्भीर रस के लिए प्रयुक्त है। इस तरह बोलों के आधार पर जो तालों का निर्माण किया गया है। वह बिना सोच समझे या अनायास नहीं हुआ है, इसके पीछे एक सिद्धान्त कार्य करता है जो संगति करते समय रस निष्पति में सहायक होता है। तबले के बोलो के वजन से भी इच्छित रस की निष्पति में सहायता मिलती है। जवाहर लाल नायक के अनुसार गूँजयुक्त डग्गे में बांए हाथ की हथेली से कभी कम दबाव और कभी अधिक दबाव द्वारा मधुर और गमकयुक्त बोलो का निकास, करके तबला संगति को और भी रसवर्दधक बनाया जा सकता है। लघु वर्ण, दीर्घ वर्ण, एकाक्षरी, द्वयाक्षरी, खुले व बन्द बोलों का प्रयोग, विभिन्न लयों व जातियों के साथ मिलकर होता है जैसे क्रोध के भाव को उद्दीप्त करने के लिए जोरदार खुले थाप अथवा भारी भरकम वर्णों का प्रयोग सहायक सिद्ध होता है जैसे धिर, धिर धुमकिट आदि श्रृंगार रस की चंचलता के भावोद्दीपन में चांटी और मैदान पर निकलने वाले बन्द व मुलायम लघु वर्णों का प्रयोग किया जाता है। तबले के विभिन्न बोल रस उत्पन्न करने में सहायक होते है। धा, धीं, ता, ना, तीं इत्यादि मुलायम बोल श्रृंगार रस के लिए धिर धिर, न, न, न, किट तक इत्यादि अद्भुत रस के लिए और धडधा, गिड़नग, धि न धा, नग तिट, धिराधिर, धिनधा, कत, धिन ता, धुमकिट इत्यादि रौद्र रस के अविर्भाव के लिए प्रयोग किए जाते है।

रस निष्पति में विभिन्न तालों का महत्व है। ताल के आद्याात की गति मिलकर अलग–अलग रसों को उत्पन्न करती है। विषमपदि तालें जैसे दीपचन्दी, झपताल, रूपक आदि करूण अथवा शोक के भावों को व्यक्त करने में सहायक होती है। वियोग श्रृंगार के गीतों में हृदय की विकलता को प्रदर्शित करने के लिए इन्ही तालों का प्रयोग अधिक होता है। दादरा, कहरवा, त्रिताल, एकताल इत्यादि तालें शांत भाव और श्रृंगार रस की रति भावना के उद्दीपन के लिए प्रयोग की जाती है। शान्त रस की अभिव्यक्ति के लिए एकताल, तीनताल, झूमरा, आड़ाचार ताल, दीपचन्दी और विलम्बित तिलवाड़ा इत्यादि तालों का प्रयुक्ति होती है। खुले बोलों वाले ताल चौताल, धमार, आड़ाचार ताल, वीर रस या भक्ति रस उत्पन्न करते है।

विभिन्न रसों की उत्पति के प्रयुक्त तालों और तालें

श्रृंगार– तीन, सात, आठ मात्रा वाली तालें जैसे– दादरा रूपक, कहरवा इत्यादि।

करूण– सात मात्रा वाली तालें, जैसे रूपक आदि।

वीर– दस, बारह, चौदह मात्रा वाली तालें, जैसे– सूलताल, चार ताल आड़ाचार ताल आदि।

भयानक– बारह और चौदह मात्रा वाली तालें, जैसे–

चारताल, धमार ताल आदि।

हास्य– चार व पांच मात्रा वाली तालें जैसे प्राचीन एकताल, द्रुत कहरवा इत्यादि।

रौद्र– बाहर चौदह मात्रा वाली तालें, जैसे चारताल, धमार आदि।

विभत्स– अनियमित मात्राओं वाला कोई भी सम–विषम ताल स्वरूप।

अद्भुत– ग्यारह, पन्द्रह, सोलह मात्रा वाली तालें जैसे कुम्भ, गजझम्पा तीन ताल आदि।

शान्त– बाहर मात्रा और चौदह मात्रा वाली तालें, जैसे एकताल व झुमरा।

ताल में जाति भेद उत्पन्न होने से भी रसोत्पति होती है। श्रृंगार, करूण, रौद्र आदि रसों के लिए तालों की विभिन्न जातियाँ अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई है। तिस्त्र जाती की तालें, जैसे दादरा ताल भक्ति, श्रृंगार व वीर रस की अनुभूति कराती है। यही कारण है कि भगवद् भक्ति से संबंधित अनेक पद तथा संकीर्तन दादरा ताल में निबध है। चतस्त्र जाति की तालें, जैसे तीन ताल, कहरवा, धुमाली आदि श्रृंगार वीर और अद्भुत रस की अभिव्यक्ति करती है। चतस्त्र जाति की तालें जैसे तीनताल, कहरवा, धुमाली आदि तालें है। खण्ड जाति की तालें करूण और वीर रस की उत्पति में सहायक होती है। मिश्र जाति की तालों में रूपक तभी तीव्रा आदि तालें प्राप्त होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि ताल की विभिन्न जातियों जैसे त्र्यस्त, चतुस्त्र, खण्ड व मिश्र जाति से भिन्न–भिन्न रसों का अविर्भाव होता है।

प्रत्येक संगीत रचना का अपना काल प्रमाण लय होता है। यह लय भाव हमारी आन्तरिक भावनाओं को प्रभावित करता है। प्रत्येक रस के लिए अलग–अलग भावों की आवश्यकता होती है। जैसे शोक अवस्था में मनुष्य के चलने फिरने कार्य करने तथा बोलने की क्षमता मंद हो जाती है। अतः करूण रस के परिपाक के लिए अनुकूल लय विलम्बित है। हास्य रति में मंदता एवं उद्वेग का अभाव होता है। फलतः हास्य और श्रृंगार के लिए मध्य लय उपयुक्त है। उत्साह, क्रोध विल्मय के अवसरों पर मनुष्य के कार्य की गति तीव्र हो जाती है इसलिए रौद्र, वीर और अद्भुत रसों को व्यक्त करने के लिए द्रुत लय उपयुक्त रहती है।

तालों की विभिन्न जातियाँ रस निष्पति में सहायक होती है, त्र्यस्त्र, चतस्त्र, खण्ड तथा मिश्र जाति की तालों में लय परिवर्तन रस निष्पति का महत्वपूर्ण साधन है। उपरोक्त जाति की तालों में लय भेद करने से अलग–अलग रसों का अविर्भाव होता है। चतस्त्र जाति की तालें जैसे तीनताल, कहरवा आदि। खण्ड जाति की तालें जैसे झपताल द्रुत लय के लिए नहीं होती। इनका प्रयोग मध्य, विलम्बित लय में ही किया जाता है। खण्ड जाति की तालें, मध्य लय में वीर रस और विलम्बित लय में करूण रस की सहायक होती है। अतः विभिन्न रसों की सृष्टि के लिए अलग–अलग लय का प्रयोग किया साधारणतया विलम्बित लय करूण और शांत रस के लिए मध्य लय और द्रुत लय श्रृंगार, वीर, रौद्र, अद्भुत इत्यादि रसों की निष्पति के लिए प्रयोग की जाती है।

निष्कर्ष

तबला संगति द्वारा रस निष्पति की स्थिति के सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा विचारों से हम इन निष्कर्ष पर पहुँचते है कि संगीत में लय और ताल के सामजस्य द्वारा विभिन्न रसों की सृष्टि की जाती है। तबले के बोलों से विभिन्न गतियों और जातियों का स्वरूप निर्मित होकर एक निश्चित रस का अविर्भाव है। शब्दों की प्रकृति के अनुकूल उचित लय का प्रयोग संगीत में सौन्दर्यवर्दधन का कारण होता है। विलम्बित मध्य और द्रुत लय अलग–अलग रसों का पोषक है। ताल में गति भेद, जाति भेद, आद्यात का वजन और घनत्व मिलकर विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति में सहायक होते है। तबला संगति द्वारा

निश्चित क्रम से रसानुभूति और आनन्दानुभूति में सहायता मिलती है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. चित्र गुप्ताः भारतीय संगीत में ताल वाद्ययों की उपयोगिताः राधा पब्लिकेशन अंसारी रोड दिल्ली–2,संस्करण 1992।
2. उमेश जोशीः भारतीय संगीत में वाद्यवृदः राजस्थानी ग्रंथाकर जोधपुर संस्करण 1990।
3. डॉ. अंजना भार्गवः भारतीय संगीत में वाद्ययों का चिंतनः कनिष्का पब्लिकेशन नई दिल्ली, संस्करण 2002।
4. अरुण कुमार सेनः भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचनः राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
5. डॉ. इंद्राणी चक्रवर्तीः स्वर और रागों के विकास में वाद्ययों का योगदानः चौखंबा ओरिएंटल वाराणसी, संस्करण 1979।
6. कैलाश श्रीवास्तव, संगीत में वाधो का वर्गीकरण (संगीत पत्रिका): संगीत कार्यालय हाथरस उत्तर प्रदेश, जून 1987।